REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

श्रीमती रीता सिंह[1] , डॉ. पार्वती यादव[2]
[1]शोधार्थी , डॉ.सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय , कोटा बिलासपुर (छ.ग.)
[2]सहायक प्राध्यापक , डॉ.सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

शिक्षण की प्रक्रिया में अपेक्षा की जाती है कि प्रत्येक विद्यार्थी सक्रिय रहकर सीखे तथा अभिभावक भी यहीं चाहते है कि वह प्रतिभाशाली हो। लेकिन कक्षा में कुछ बच्चें ही सीखने–सिखाने की प्राक्रिया में सक्रिय रहते है। इस समस्या के निवारण के लिए अध्यापन कार्य में कुछ नवीनता एवं परिवर्तन की आवश्यकता होती है। विद्यार्थी में अपार संभावनाएँ एवं क्षमताएँ होती है, जिनके विकास हेतु अवसर उपलब्ध कराने का कार्य अध्यापक–पालक व समाज का होता है। सर्वाधिक योगदान शिक्षक का व उनकी शिक्षण विधि का होता है। बच्चा जिन आदतों व संस्कारों को सीखता है वे जीवन पर्यन्त रहते है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इसके लिए शोधार्थी द्वारा बिलासपुर जिले के 15 छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल स्कूलों के 300 विद्यार्थियों का चयन किया गया है। अभिभावक सहभागिता के लिए विजय लक्ष्मी चौहान और गुंजन गनोत्रा अरोरा द्वारा निर्मित उपकरण का नाम Parental Involvement scale (PIS–CA) को एवं परीक्षा दुश्चिंता के लिए मधु अग्रवाल और वर्षा कौशल द्वारा निर्मित उपकरण का नाम Students Examination Anxiety Test (SEAT) एवं शैक्षिक उपलब्धि हेतु विद्यार्थियों के पिछले वर्ष के अंकों का अध्ययन किया गया है। आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् पाया गया कि छत्तीसगढ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों में अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता के मध्य सार्थक सहसंबंध है।

Keywords – अभिभावक सहभागिता, परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि

प्रस्तावनाः–

विद्यार्थियों में सर्वाधिक तनाव परीक्षा के दिनों में देखने को मिलता है खासकर बोर्ड परीक्षाओं के दौरान गिल, मनीषा (2011) ने अपने लेख 'एग्जामिनेशन स्ट्रेस' में लिखा है ''परीक्षा को लेकर तनाव आम बात है। खासकर बोर्ड परीक्षाओं के दौरान यह तनाव छात्रों को कुछ ज्यादा ही सताता है। ऐसा नहीं है कि यह तनाव सिर्फ परीक्षा के दौरान ही होता है, बल्कि परीक्षा के परिणाम को लेकर परीक्षा के बाद भी छात्र परीक्षा तनाव में परेशान रहते है इससे बचना जरूरी है।'' तनाव एक ऐसी बहुआयामी प्रक्रिया है जो लोगों में वैसी घटनाओं के प्रति अनुक्रिया के रूप में उत्पन्न होती है जो हमारे दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक कार्यों को विघटित करती है। आंकड़ों के विश्लेषण के पश्चात् पाया गया कि छत्तीसगढ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले

विद्यार्थियों में अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता के मध्य सार्थक सहसंबंध है। परीक्षा के समय अभिभावक विद्यार्थियों को समय नहीं दे पाते हैं जिससे बालकों में डर, भय, दुश्चिंता, चिड़चिड़ापन आ जाता है, परीक्षा दुश्चिंता के कारण बालक तनाव में आ जाता है जिसका प्रभाव परीक्षा परिणाम में देखने को मिलता है। परीक्षा के समय विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों का सहयोग मिलने से बहुत कुछ हद तक परीक्षा दुश्चिंता को कम किया जा सकता है। 'परीक्षा' शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग है। इसके द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का ही पता नहीं चलता बल्कि अध्यापक की कार्यकुशलता एवं शिक्षा की गुणवत्ता का आंकलन भी सरलता से हो जाता है। परन्तु वर्तमान समय में विद्यार्थी परीक्ष को अपन भविष्य से जोड़ लेते हैं तथा शिक्षकों एवं अभिभावकों के अत्यधिक दबाव में विद्यार्थियों में चिंता का स्तर बढ़ जाता है। कभी–कभी तनाव की तीव्रता इस सीमा तक बढ़ जाती है कि विद्यार्थी आत्महत्या जैसा घातक निर्णय ले बैठते हैं। मनानी, प्रीति तथा गौतम, मुकेश कुमार (2011) द्वारा किये गए शोध अध्ययन परिणामों से स्पष्ट है कि परीक्षा संबंधी चिंता विद्यार्थियों को निराशा से भर देती है तथा उनके दिमाग में आत्महत्या जैसे घातक विचार को भी जन्म देती है। विद्यार्थियों में उत्पन्न होने वाला तनाव उनके परीक्षा परिणाम पर भी असर डालता है।

अध्ययन का औचित्य

इस पद को शोधार्थी द्वारा इसलिये लिया जा रहा है क्योंकि 10वीं के छत्तीसगढ माध्यमिक शिक्षा मंडल एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल में अध्ययनरत् विधार्थियों का अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता और उनमे कितना अंतर पाया जाता है। इसे सी.जी और सी. बी.एस.ई के विद्यार्थियों का उनके अभिभावक परीक्षा के दिनों में कितना ध्यान रख पाते है ताकि वे परीक्षा दुश्चिंता को कम कर सके। जहॉ तक पूर्व संचित ज्ञान एवं पूर्व में सम्पन्न हुए अनुसंधानों से यह ज्ञात होता है कि छत्तीसगढ माध्यमिक शिक्षा मंडल एवं केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा मंडल मे अध्ययनरत् विद्यार्थियों का अभिभावक सहभागिता एंव परीक्षा दुश्चिंता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है उसका तुलनात्मक अध्ययन किसी और शोधार्थी द्वारा नहीं किया गया है। इसमें यही देखने का प्रयास शोधार्थी द्वारा किया गया है। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल की अपेक्षा केन्द्रीय शिक्षा मण्डल में पढ़ने वाले बच्चों के पैरेंन्ट्स में अभिभावक सहभागिता ज्यादा देखी जाती है।

समस्या कथन

''छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं परीक्षा दुश्चिंता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन''

प्रयुक्त पदों की परिभाषा –

1. अभिभावक सहभागिता –

अभिभावक की सहभागिता औपचारिक रूप से समुदाय संस्कृति, शिक्षा के क्षेत्र एवं विभिन्न क्षेत्रों की दक्षता के लिए बालक व बालिकाओं के प्रति एक अच्छा तालमेल बिठा कर समन्वयक रिश्ता स्थापित करना ही अभिभावक सहभागिता है।

2. परीक्षा दुश्चिंता

परीक्षण में घबराहट एक मनोवैज्ञानिक अवस्था होती है जो कि किसी व्यक्ति द्वारा किसी परीक्षण के पहले अत्यधिक तनाव, चिंता व असहजता का अनुभव किया जाता है। यह चिंता अधिगम व प्रदर्शन में महत्वपूर्ण बाधा के रूप में उत्पन्न होता है। जो कि प्रत्यक्ष रूप से शैक्षिक प्रदर्शन को कम करता है।

3. शैक्षिक उपलब्धि – शैक्षिक उपलब्धि महाविद्यालयों के परीक्षाओं से संदर्भित होता है। परीक्षाओं के अंतिम में विद्यार्थी द्वारा प्राप्त कुल अंक जो कि महाविद्यालयों द्वारा अभिलेख के रूप में रखा जाता है व जिसके माध्यम से शैक्षणिक उपलब्धियों में महाविद्यालयों द्वारा चिंतन किया जाता है।

4. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा

5. केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल

अध्ययन का उद्देश्य –

1. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन।
2. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पना –

1. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।
2. छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं उनके शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध नहीं पाया जाएगा।

शोध विधि –

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या एवं न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा आंकड़ों के संग्रहण हेतु बिलासपुर जिले के केन्द्रिय विद्यालय में अध्ययनरत् कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले समस्त छात्र जनसंख्या के रूप में सम्मिलित किये गए हैं इनमें से न्यादर्श हेतु केन्द्रिय शिक्षा मण्डल के 15 विद्यालयों में से 300 विद्यार्थियों का साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया है।

शोध उपकरण –

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु निम्नानुसार शोध उपकरण का प्रयोग किया गया है–

- **मधु अग्रवाल और वर्शा कौसल द्वारा निर्मित** – Students Examination Anxiety Test (SEAT)
- **विजय लक्ष्मी चौहान और गुंजन गनोत्रा अरोरा द्वारा निर्मित** – Parental Involvement scale (PIS –CA)
- शैक्षिक उपलब्धि हेतु विद्यार्थियों के पिछले वर्ष के अंकों का अध्ययन किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय विधि –

सहसंबंध गुणांक $r = \frac{\sum xy}{\sqrt{\sum x^2 . \sum y^2}}$

HO1 छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाएगा।

समूह	विद्यार्थियों की संख्या N	मध्यमान	$\sum x^2$ & $\sum y^2$	$\sum xy$	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता कोटि	सार्थकता स्तर	परिणाम
अभिभावक सहभागिता	600	78.46833	46221.4	22784.32	0.398		0.05=0.062	धनात्मक सहसंबंध
शैक्षिक उपलब्धि	600	73.843	71007.17				0.01=0.081	

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 1 में चरों में मध्य सहसंबंध को ज्ञात करने हेतु कार्ल पियर्सन के गुणन–आघूर्ण विधि का प्रयोग किया गया है। उपरोक्त सारणी के अनुसार छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रिय शिक्षा माध्यमिक के अंतर्गत विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों (N=1200) की अभिभावक सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 78.46833 तथा 73.843 है तथा इनके मध्य का सहसंबंध गुणांक 0.398 है। सार्थकता कोटि $(df) = 1198$ के लिए 'r' का सारणी मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 0.081 है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर 0.062 है। r के प्राप्त मान 'r' के सारणी मान से 0.01 तथा 0.05 दोनों ही स्तरों पर अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना HO_1 '' छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावक सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाएगा।'' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष – निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अंतर्गत विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों की अभिभावक सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबंध हैं।

HO2 : छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाएगा।

समूह	विद्यार्थियो की संख्या N	मध्यमान	$\sum x^2$ & $\sum y^2$	$\sum xy$	सहसंबंध गुणांक	सार्थकता कोटि	सार्थकता स्तर	परिणाम
परीक्षा दुश्चिंता	600	19.63833	7198.518	3229.331	0.143		0.05=0.062	धनात्मक सहसंबंध
शैक्षिक उपलब्धि	600	73.843	71007.1				0.01=0.081	

व्याख्या एवं विश्लेषण

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 में चरों में मध्य सहसंबंध को ज्ञात करने हेतु कार्ल पियर्सन के गुणन–आघूर्ण विधि का प्रयोग किया गया है। उपरोक्त सारणी के अनुसार छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रिय शिक्षा माध्यमिक के अंतर्गत विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों (N=1200) की अभिभावक

सहभागिता एवं शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान क्रमशः 21.8605 तथा 8551.833 है तथा इनके मध्य का सहसंबंध गुणांक 0.143 है। सार्थकता कोटि $(df) = 1198$ के लिए 'r' का सारणी मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 0.081 है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर 0.062 है। r के प्राप्त मान 'r' के सारणी मान से 0.01 तथा 0.05 दोनों ही स्तरों पर अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना HO_2 '' छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया जाएगा।'' अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं केन्द्रीय शिक्षा मण्डल के अर्न्तगत आने वाले विद्यालयों के कक्षा 10वीं में पढ़ने वाले छात्र एवं छात्राओं के परीक्षा दुश्चिंता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सहसम्बन्ध हैं।

निष्कर्ष –

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल में आने वाले कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं अभिभावक सहभागिता दोनों का ही उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सार्थक सहसंबंध पाया गया।

उपसंहार –

परीक्षा के समय अभिभावक विद्यार्थियों को समय नहीं दे पाते हैं जिससे बालकों में डर, भय, दुश्चिंता, चिड़चिड़पन आ जाता है, परीक्षा दुश्चिंता के कारण बालक तनाव में आ जाता है जिसका प्रभाव परीक्षा परिणाम में देखने को मिलता है। परीक्षा के समय विद्यार्थियों को उनके अभिभावकों का सहयोग मिलने से बहुत कुछ हद तक परीक्षा दुश्चिंता को कम किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ

- भटनागर, डॉ. सुरेश एवं जोशी, डॉ. सुरेश – शिक्षण अधिगम का मनोविज्ञान
- Henry and Garret, Statistical Methods.
- चौहान, सुदीप कुमार, परासर, ज्योतीमा, शर्मा, कु. पुनम – बाल मनोविज्ञान एक अध्ययन
- Jackson, E. (2008). " Mathematic anxiety in students teachers."
- लाल, रमन बिहारी एवं जोशी, सुरेश चन्द्र – शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकी
- Melincavage, SM (2011). "Students Nurse's Experiences of anxiety in the clinical setting."
- Schatz, DB & Rostain, AL (2006). "ADHD with comoribid Anxiety a review of the current literature."
- Sharif, F. & Armitage, P. (2004). "The effect of psychological and education counseling in reducing anxiety in nursing students."
- Terrion, JL & Leonard, D. (2007). "A taxonomy of the characteristic of student peer mentors in higher education finings from a literature review."
- Zientek, LR. & Yetkiner, ZE (2010). Characterizing the mathematics anxiety literature using confidence intervals as a literature review''

श्रीमती रीता सिंह
शोधार्थी , डॉ.सी.वी. रामन् विश्वविद्यालय , कोटा बिलासपुर (छ.ग.)